भूमिका

यह पुस्तक मेरी माता (जिनके पिता का नाम मुन्शी कल्याणरायजी फ़िरोजाबाद निवासी और भ्राता का नाम मुन्शी गिरिधारी लालजी चीफ़रीडर देहरादून है) जी की बनाई हुई है और इस में अवश्यमेव कविता के दोष हैं परन्तु सर्वसाधारणके सामने माताजीका असली कार्य बिना किसी प्रकारको अदल बदल के रक्खा जाता है। जिस से उनका असली प्रेम जो स्वतः उनके हृदय में उत्पन्न हुआ प्रकट हो।

इस के अतिरिक्त बहुतसी भजनों की पुस्तकें श्रीमतीजी की बनाई हुई हैं जो समयानुसार प्रकाशित होती रहेंगी। जो अशुद्धियां इसमें दृष्टि आवें उनको एक अनभिज्ञ स्त्री का प्रथम लेख जानकर क्षमा करें यदि कृपा करके मुझे सूचित करेंगे तो द्वितीयवार छपाने में शुद्ध करदी जावेंगी।

सज्जनों का दास—

जुलाई १९०८ — मुन्शी गोविन्दसहाय, चीफ़रीडर-बिजनौर

श्री स्वर्गवासिनी माता जी,

आपके कमला—भजनसरोवर प्रथम भाग का दूसरा संस्करण प्रकाशित किया जाता है। प्रथम संस्करण के बारे में यन्त्रालय के दोषों से आपको किसी कदर दुःखित पाता था। वे दोष आपके हाथ की लिखी कापी से मिला कर दूर कर दिये गये हैं। जहां कहीं आपका असली भजन नहीं मिल सका, वहां अपनी बुद्धि के अनुसार ठीक कर दिया है। आशा है अपने मातृभाव से कृपा करके क्षमा करेंगी। जीवों में कोई अन्तर नहीं, शरीरों में अवश्य अन्तर है। इसी कारण यह पत्र आपके जीवात्मा की सेवा में उपस्थित करता हूं। यद्यपि आपका जीवात्मा सूक्ष्मरूप से स्वर्ग में निवास करता है, तथापि मैं तो जबतक इस शरीर में हूं आपको मातृभाव से ही देखूँगा।

फर्वरी १९१८ — चरणसेवक— गोविन्दसहाय

श्रीः

कमला-भजन-सरोवर

प्रथम भाग।

दोहा-रमा सहित श्रीरामके, उमासहित त्रिपुरार।
अरु गुरुगणपति सिद्धमुनि, सबको मनहिंविचार॥ १॥
कंठ सरस्वती आवसो, मन निर्मल होजाय।
बुद्धि शुद्ध जब होयगी, जो तुम करो सहाय॥ २॥
करता हरता जगत के, सकल तुम्हारे हाथ।
विनती मेरी कृपाकर, सुनियो हे रघुनाथ॥ ३॥
मानुष देही पायके, नाकुछ कियो उपाय।
काल फौज सिरपै खड़ी, दिया नगाड़ा आय॥ ४॥
भूपति प्रभु की आश है, जब तक घटमें स्वास।
कृपाकरो हिरदे बसो, सदा रहो ममपास॥ ५॥

चौपाई।

दीनबंधु यह विनती मेरी कृपा करो अब सुनो सबेरी॥
मैं मतिमंद अंध जग माहीं तुम हीं कृपा करो मम सांई॥

हमको है अब आश तुम्हारी भवसागर से देवो उतारी॥
जो अपराध किये हों स्वामी सो सब क्षमियो अंतर्यामी।
दोहा—जगत पिता जग आतमा जगत गुरू गोविन्द ।
कृपा करो वर दीजिये, तासे हो आनंद ॥

चौपाई ।

भगत अनूपम देह आपनी मिटै मलिन मन होय चांदनी।
अंधकार मम हिरदे मांहीं तुम ही काट सकोगे सांई ॥
जबलग मन थिर होय न मेरा का विध पावें चरनउजेरा
मोहिमतिमंदमूढ़जगजानो।कौनभांतिहरचरणपहिचानो
दोहा—हे प्रभु मेरे नाथ जी तुम से यह अरदास
कृपा दृष्टि निहार के करो हृदय में वास ॥ १ ॥
श्री गुरु गणपति सिद्ध मुनि नारद और हनुमान।
विधि हरिहर सुरपति सहित उमा रमा ब्रह्माण ॥ २ ॥
सबको शीस नवाय के बिनती करौं उदार।
मेरी ओर निहारियो कृपा करो त्रिपुरारी ॥ ३ ॥ २ ॥

चौपाई ।

तुम्हरी महिमा सबजग गावै मो असाधको पार न पावै॥
धन्य मार्ग उन भक्तन कोरी तिनकोमन हरचरणलगोरी

भजन नं० ॥ १ ॥

विनती मेरी श्रवण सुनो जी नमो नमो नारायणस्वामी
कठिन पंथ साधन है भारी, कैसे पहुँचे टेर हमारी॥
अविगत अजर अमर एक नामी,
कौन भाँति मैं करूँ नमामी ॥ विनती० ॥ १ ॥

आगम अगम अगाध अगोचर, रूपरेखनहींमायाधारी
है सर्वज्ञ सदा अविनाशी,
ध्यान धरैं योगी संन्यासी ॥ बिनती० २ ॥

नमस्कार निराकार नरोत्तम,
हो सब घट में व्यापक प्रभु तुम ।
क्षमा करो अवगुण मेरे स्वामी,
जानत हो सब अन्तर्यामी ॥ विनती० ३॥

गुरु बिन ज्ञान न हरिबिन प्रीती,
सतगुरु बिन कैसे मिटै अनीती ।
कमला शरण गहो स्वामी की,
आवागमन छुटै प्राणी की ॥ विनेती० ४॥

भजन नं० ॥ २ ॥

सरस्वतीविनवौंबारम्बार, करोजी मेरीबुद्धिशुद्धकरो। टे०।
जिन के हृदय बास करो तुम अलख भँडार भरो ।
जो हरिखान भणी, मुक्तन की ताको आन धरो ॥
चारों वरण पवन छत्तीसों निज उपदेश करो ।
बास करो उर अन्तर मेरे हरिरस कलश धरो ॥
कमला चरणन शीश नवावै संशय सकल हरो ।
हरो जी मेरी बुद्धि शुद्ध करो ।

भजन नं० ३ लावनी ।

सुन लीजो दीनानाथ अरज यह मेरी ।
भक्ती दृढ़ हमको देव्यो करो मत देरी ॥टेक॥

मैं दीन पुकारत द्वार टेर सुन मेरी ।
आशा कर आई नाथ शरण में तेरी ॥ सुन० १
रखलीजो मेरी लाज आज गिरधारी ।
यह संशय सर्पन लिपट रही मोह भारी ॥सुन० २
भक्तन के कारण नाथ करो नित फेरी ।
मूढन की ममता हरो करो नहीं देरी ॥सुन० ३
यश गावैं वेद पुराण रटैं घटधारी ।
धर ध्यान लगा के देख रहे त्रिपुरारी ॥ सुन० ४
चरणनकी दीनानाथ आश बड़ी तेरी
कमला को कीजो नाथ चरणकी चेरी ॥ सुन ५

भजन नं० ४ लावनी ।

हे दीनबंधु भगवान शरण मोहे लीजे ।
अपनी जन जान के नाथ कृतारथ कीजे ॥टेक॥
दृढ़ भक्ती ज्ञान विवेक कृपा कर दीजे ।
यह अंधकार मिट जाय तिमिर सब छीजे ॥हे० १॥
हे दीनबंधु महाराज दरश नित दीजै ।
माया ममता अहंकार खैंच सब लीजै ॥हे० २॥
जन होवै ज्ञान प्रकाश भ्रम सब छीजे ।
माया प्रभुकी बलवान कौन विध कीजै ॥हे० ३॥
मन छोड़ो छूछी छाछ अमीरस पीजै ।
मन विमल होय आनंद प्रेम रस भीजै ॥हे० ४॥
शरणागत आई नाथ वेग सुध लीजै ।

अवगुण करिये हरि दूर दास कर लीजे॥ हे० ५
कमला हरके चरण कमल चित दीजे।
नहिं सुमरे गुरु के वाक्य कौन विध कीजै॥ हे० ६॥

भजन नं० ॥ ५ ॥

गुरु बिन कौन बँधावै मेरी धीर ॥ टेक ॥
गुरु बिन कौन बँधावै धीरा, मन तो है अधीरा।
गुरु सुपने मैंने ऐसे देखे, झलक२ मानो झलकै हीरा॥ गुरु.
झलक देख मन सोचन लागी, गुरु हैं शान्त सरीरा।
कोटिन सिद्ध तपैं जहां धूनी, एक गुरु बुधवंत गंभीरा॥ २
नैन खोल जब इत उत देखूं, कहां गुरु कहां चेला॥ ३
सोच समझ मनमें पछताई हाय दई तलफै मेरा जीरा ३
कहै कमला कर जोड़ हमारे, काटो पाप शरीरा।
तुमकू समरथ है मेरे स्वामी, गुरु बिन कौन हरै मेरी पीरा ४

भजन नं० ६

करोरे मन पूरा सतगुरु खोज ॥ टेक ॥
खोज करे से सतगुरु पावै, आतम चित्त विचार क॥ ०
विश्वपती जो अज अविनाशी, वोही तात लो मात ॥ क०
जागत सोवत सदा देह में, निरख निरख पहिचान ॥ क०
ध्यान करो त्रिकुटी रुख निरखो, सुखमन तुरियातीन क०
विमल होय जब दृष्टी आवै, पूरन जगमग जोत ॥ क०
कमला सतगुरु के बलिहारी, वेगी करो उपाय। करोरे ०॥

भजन नं० ॥ ७ ॥

हे मन आतम राम अकेला ॥ टेक ॥

पांचतत्व गुण तीन आन के, काया काल कलेवा ॥ हे०
वशीभूत इन्द्रियन के होके, क्या मूरख दुख झेला ॥ हे०
आतम एक सदा अविनाशी, यह तो जगका मेला ॥हे०
त्रिकुटी घाट चढ़े जन हरके, तू तो मन अलबेला ॥ हे०
दर्शन हैं जहां ज्योत रूपके, निरखे अधिक उजेला ॥ हे०
हर गुरु बिन मारग नहीं पावे, कमलादर्श दुहेला ॥ हे०

भजन नं० ॥८।

क्यों खोवे नादान हर बिन जन्म नगीना ॥ टेक ॥
ऐसा परम पद भारी सुमरण क्योंना कीना ॥हर०॥
पूरन पद निरवाण करे निश्चय परवीना ॥ हर०॥२
सुपने में सुख पत तुरिया।जागत काहे न चीना ॥हर०॥३
सुमरासदाप्रभुकोमनमेरे।जबलग जगमेंजीना ।हर०॥४
कमलाचरण के बल बलिहारी प्रभुका सहारा लीना॥हर०

भजन नं० ॥९॥

उपदेशक जन कोइ पूरा हो ॥ टेक ॥
गुरु वशिष्ठ सम ज्ञान उपावे, नारद सम कोई सूराहो ।उ०
वेदव्यास शौनक शनकादी, इन सम कोइ परवीना हो
ज्ञान उपावे भरम नसावे, ऐसा कोइ बुद्धि वीरा हो उ०
कमला सुरता ऐसी खेंचो पहुँचे जहां रघुवीरा हो ।उ०

भजन नं० ॥ १० ॥

मन हर के मिलन की राह गहोरे ॥ टेक ॥
पहिलापैंडा शान्ती सागर जिसमें मनअस्नान करोरे।म०

दूजा पैंड़ा दृढ़ता धारो थिरता मन के बीच गहोरे।म०
तीजा पैंड़ा मन अनुरागी बुद्धी को विरमाय रहोरे।म०
चौथा पैंड़ा मगन होय मन मुदता को मन माहिं धरोरे।म.
पंचम पैंडा प्रेम सरोवर सुरता से समझाय कहोरे ।म०
षष्ठम पैंडा ध्यान हरी का दृष्टी में लग जाय लखोरे ।म०
सप्तम दर्शन जोत रूपके दर्शन कर मन लीन भयोरे।म०
कमला प्रभु से करै प्रार्थना पाप ताप सब दूर करोरे।म०

भजन नं० ॥११॥

चढ़ीरी जाके प्रेम खुमारी वाको मरम न जाने कोय।टेक।
साधु संत मिल मथन किया है बुद्धि कीरी मथनिया धारी
सुरत निरत की रई बनाकर प्रीति कीरी डोर लगारी।च०
सार माल सब काढ़ लियाहै पीवत हैं सब संत संसारी।च
चढ़ीहै खुमारीभयो मगनमन प्रेमकी लहरबढ़ीरी अपारी।
हरिचरणन का करो आसरा कमला मनमें येही विचारी॥
चढ़ीरी० ॥ ५ ॥

भजन नं ॥१२॥

रामा जी मैं तो दरशन की प्यासी,
मोहि दर्शन क्यों ना दिये ॥ टेक ॥
दरश परस उन ही को देते जिनके चित्त उदासी॥१॥
दर्शन का सुख वोही जाने जिन आत्म प्रकाशी ॥२॥
शारद शेष गणेश ब्रह्मरत ध्यान धरें कैलासी ॥३॥
दर्शन दुर्लभ जोत रूप के खोज करैं संन्यासी ॥४॥

कमला दर्शन सहज न जानो कठिन पंथ जैसी काशी ॥
रामाजी मैं तो दरशन की प्यासी ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥१३॥

कैसेरी यह सुरता निरत करै ॥ टेक ॥
मन कञ्चन से भवन सजावे समता दिवट धरे ॥१॥
दृढ़ता दीपक मुदृता बाती ज्ञान से वार धरे ॥ क० ॥
विषय वासना दूर होय जब बुद्धी विमल भरें॥भरेरी॥
सतके पुष्प धरम का धागा चुन चुन माल बने ॥बनेरी॥
प्रेम प्रीतिकी रंगीरे चुनरिया ज्ञानके नैन खुलें.खुलेंरी॥
संयम नेम बनाय विभूषण सब सिंगार करे ॥ क० ॥
हरपै जाय सुरत जब सनमुख मन आनंद करे ।करे०॥
हरी चरणनकी शरण गहे जब कमला क्यों भटके ।करे०।

भजन नं० ॥ १४ ॥

रचोरे मन अपने भुवन में रास ॥ टेक ॥
अहंकार ममता मद त्यागो समता राखो भाव॥रचो०१।
पाँचन मार पचीसन बस कर आतम तत्व विचार।र०
मन मूर्ख निर्मल हो नाचै बुद्धि करै है विलास ।रचो०।
मन मृदंगसुरत सारंगी स्वासा तार सितार।रचो।०४।
घंटा शंख मृदंग बाँसुरी झुनरझुनरधुन होय ।रचो०
अनहद बाजे बाज रहे जहां सोहम २ राग॥रचो०॥६
नाद बिंद प्रघट दिखावै झिल मिल ज्योती होय ॥७॥
हरकी शरण गहोरी कमलामनमें धीरज लाय ।रचोरे०

भजन नं० ॥१५॥

येही जग सार उपकारा, करो मन ब्रह्म आधारा॥टेक॥
करो अभ्यास दृढ़ सारा, रटो हरिनाम निरधारा ॥ यही०
बिछाओ प्रेम आसन को, जगाओ बुद्धि सुरती को॥यही०
के सुखपति जागरत सुपना, लगा हरि नाम की रटना॥
अवस्था बीच तुरिया के, दरस होते हैं जोती के॥यही०
जमाओ दृष्टि त्रिकुटी में, गई सुरता निकट वन में॥यही०
जोत एक रूप दरशाती, तु कमला क्यों नहीं धाती॥य०

भजन नं० ॥१६॥

बरसे बरसे राम रस भारी ॥ टेक ॥
घन नहीं गरजे मेघ नहीं बरसे दमके २ दमनिया तुम्हारी॥
साधु संत मिल पीवन बैठे आगइ २ लहरिया तुम्हारी॥
घटै न बढ़ै कभी होय न पूरा भरदो २ गगरिया हमारी॥ब०
मोल करै तो ठकै दूरसे पूरन होगइ सुरतिया तुम्हारी॥
कमला मन तेरा नहीं अनुरागी लागी २ न प्रेम कटारी ।
बरसे २ रामरस भारी ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ १७ ॥

हरके रंग में रंगो मन सारी ॥ टेक ॥
हरिका रंग सदा रंग भीना शोभा पाते संतजन भारी ॥
सबसाखियन मिलरंगरंगोहै फीकीरहगइ चुनरिया हमारी
हरिरंगरंगा सोइ जन सांचा राजा हो या भिकारी॥रा०
जगमेंविरलारंगराता कोईउमग हिया भरैजलवारी॥रा०
हरी के रंग रंगो मन कमला स्वामी करें छिनक में पारी॥

भजन नं० ॥ १८ ॥

मनुआ चढ़जा गगन अटारी ॥ टेक ॥

धीरे धीरे चलनारे भाई संग लेले सुरतिया हमारी॥म०
सुन्नकार जब मग में आवै डरियो मतना टरै भै सारी॥
पहुँचजाय जभी नगरी में दृष्टी आवैंगे रंग अपारी॥म०
अनहद बाजे बाजरहे जहां होवे शब्द महा धुनभारी ॥
जोतरूप जहां बीच विराजे साधु बैठे लगाये तारी॥म०
सुरत निरत जहांमंगलगावै मनुवा होवे जाय अनुरागी॥
कमला हरको शीस नवाओ जासेहोगी गुजरियातुम्हारी
मनुआ चढ़जा गगन अटारी ॥ ७ ॥

भजन नं० ॥ १९ ॥

मुक्ती होवै जो आतमविचारी ॥ टेक ॥

कहां से आये कहां जावोगेकौनकरता सहाय तुमारी॥मु०
नहीं घर तेरा नहीं घर मेरा करतेरहना सदा रखवारी॥मु.
मायाका परिवार निकालोमनकोकरलो सदा ब्रह्मचारी॥
सोचसमझइसजगमें देखो मायाहोरहीबैरनिया तुम्हारी
बिन सतसंग सुलभ नहीं भाई कैसे होवेरे मन उपकारी॥
चौरासी नहींछूटेरी कमला जब लग न आतमविचारी
मुक्ती होवै जो आतमविचारी ॥ ६ ॥

भजन नं० ॥२०॥

देखि आ मन कैसा गगन है ॥ टेक ॥

कैसा सुन्नकार दिखलावै क्याश्वस्तु मिलेमारग में।दे०

ऋद्धसिद्ध जब सन्मुख आवे मूंद नैनलो फिरनहीं कुछ है
तनके बीच अनेक झरोका सुर विचरें वहां कैसा गगन है
इन्द्र कुबेर वरुण जहां आके ध्यान हटावें कैसा भजन है। दे०
आकै पवन ज्ञानदीपकके देय झकोला कैसा यतन है॥ दे०
कच्चे जीव गिरैं पृथ्वीपर पक्के जायँ जहां आतम है। दे०
कमलादर्शन वे जन पावैं जिनके हिरदे राम बसत हैं। दे०

भजन नं० ॥२१॥

चेतरे मन क्या है जगत में ॥ टेक ॥
जगकी सकल भावना त्यागो राखो दृढ़ता आतम पद में। चे०
यह जग कुछ आसार नहीं है डूब रहे माया के मद में॥ चे०
भ्रम भगाओ तिमिर नसाओ समता भाव धरो निज मन में
अजर अमर प्रभु है अविनाशी ध्यान धरो संभ्रमो निज मन में
राम भजन को यह तन पाया सो विसराय दिया तैं छिन में। चे०

भजन नं० ॥२२॥

तेरे शंका मनके बीच ज्ञान धन क्यों होता ॥ टेक ॥
जैसे मृगतृष्णाके जलसे तृष्णा तृप्त न होय।
तैसेइ मन इस जगमाया से, कबहू थिर नहीं होय॥
लम्बा तिलक लगायके और बैठे आसन मार।
हाथ सुमरनी पेट कतरनी बोले झूठे वाक ॥ ज्ञान०
जैसे जलमें उठैं बुलबुले जल ही में रमजाय।
तैसे ही तन यह है माटी का माटी में मिल जाय ॥ ज्ञा०

शंका मनकी काढ़के और धरो हरी का ध्यान।
आतमपदमें जाय समाओ फिर कुछ संशयनाय॥
कमला हरकी करो वीनती शुद्ध बुद्धि कर जोड़।
हेप्रभु कृपाकरो दीनन पर अपनी ओरनिहार ॥५॥

भजन नं० ॥ २३ ॥

साधोजी मेरा राम सनेही ॥ टेक ॥

इस जग का है झूठा खयाल॥जिन कारण बहु पाप कमाये सो नहीं होवे साथ । साधोजी०॥१॥ सुत पति धन परिवार बड़ाई मिथ्या जग का ख्याल।साधोजी०॥ वो मेरा जगदीश्वर स्वामी करदे बेड़ा पार । साधो० ऐ मन मूरख शरण गहोरे जबई सनेही राम । साधो० करुणा में हर दीनदयाला सांचा है दरबार।साधो०४ हे प्रभु कमला है बलिहारी तुम सम को न दिखाय ॥५॥

भजन लावनी नं० ॥२४॥

वो पूरणपद निरवाण वोही पाता है ।
जिन तजादिये सकल विकार शरण जाताहै ॥टेक॥
नहीं राग न रोष न दोष सकल ढहता है ।
मन निश्चय कर जिन लिया कहीं भय ना है ॥ वो० १॥
भक्तों की संगत करैं विचरते वन में।
कोई हर्ष शोक की बात न राखें मन में ॥वो पूरण०
निज आतम का अनुराग बसाया मन में।
माया ममता का लेस न राखें तन में ॥वो पूरण०३।

निज पूरन पद में प्राण बसा रहता है।
मनहु आचरण लौलीन मगन रहता है ॥वो पूरण० ४
कमला इस जगके बीच बतादो क्या है।
भजले तू श्रीकरतार सकल करता है॥वो पूरण०५॥

भजन नं० ॥२५॥

मन में ही सांचा अनुराग लगादो धुन राम हरी ॥टेक॥
मनको थिरता में गहो और अन्तःकरण सुधार।
सोहं की धुन घट में राखो मुख से कहो श्रीराम।लगा०१
जिनको रटना रामकी और अवधुन अवधुन होय।
हिरदे में तो राम बसत हैं बाहर बरसे नूर।लगादो०
राम राम की लूट है रे लूटी जाय सो लूट।
अन्तकाल पछताओगे रे प्राण जांय जब छूट ॥ल०३॥
रामनाम रटना रटोरे जब लग घट में प्राण।
कभी तो दीनानाथ के रे भनक पड़ेगी कान ॥लगा०
तुलसीदास आस रघुवरकी राखे मन के माहिं।
कमला ऐसेगुणवन्त गुरू की क्यों ना शरण में जाय।ल०

भजन नं ! २६॥

कठिन दुनिया मनकीलगनी रटेंहमकौनविधिसजनी।टे०
करैवोअपने मनमानी।नाआवै पास अभिमानी । क०
भजनमें क्यों करै हानी । रटो हरीनाम सैलानी ।क०
करै तू ख्वार हमजानी उमरिया जात नहीं जानी।क०
करै तू खूब नादानी सहैगा कष्ट रे प्रानी।कठिन०४

न हरसे प्रीत करजानी, रही इस घरमें गलतानी । ५
दयानिध दीन मोहिजानी हरो कमला की नादानी॥क०

भजन नं० ॥२७॥

पूरणपद निरवाणी, मन तू क्यों ना भजेरे अभिमानी॥टे०
पूरणब्रह्म सदासर्वव्यापी सकल गुणन की खानी॥म०
पूरन पद निरवाण निरंतर रट मन हो अब ध्यानी॥म०
जो तू भाव भक्ति नहीं जाने है मन ऐ नादानी॥मन०
भक्ति बिनाकारज नहीं होवे आई काल निशानी॥मन०
हरबिन कारज सिद्ध न होवे कमला जगत कहानी।
मन तू क्यों ना भजे अभिमानी ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥२८॥

मन तू आतम जाय जगारे ॥ टेक ॥
परमातम आतम यह एकही सूक्षम रूप आकारे म०
ब्रह्म जीव में अंतर नाहीं देखो नैन निहारे ॥ मन०२
वे तो जागत रहत सदा कौन जगावन हारे॥मन०३
है सब में और सब से न्यारे किनहू नहीं निरधारे॥
निरंकार निरलेप जगतसे मुनिजन खोजन हारे म०
कमला तू क्यों वाद बढावै जग को देखन हारे ॥ म०

भजन नं० ॥ २९ ।

कैसे जाऊं महाराज ब्रह्म की सत्ता कहां पाऊं टेक॥
सरिता सिन्धु समभारी नहिं वसुधा का पार॥ब्रह्म०
तपता में बड़ी व्याकुलता यमुनाहै महराय॥ ब्रह्म२

गगना में वोह सुन्न दिखावे केहर और बन बाग ।
मन तो कदम नहीं धरता सुरती देय न साथ॥ब्रह्म०
स्वासासमुद्र में डूबी दृष्टी डगमगा२ होय॥ब्रह्म०५॥
कमला कौन विध कीजिये तज गये हैं सब साथ।ब्रह्म०

भजन नं० ॥ ३० ॥

तुम ही नाथ हमारे रामा मोहे भूली डगर बतादो।टेक।
पंथ कुपंथ सभी फिर आई सीधी राह न पाई ॥रा०
भरमत सारी उमर गँवाई अजहूं डगर न पाई॥रा०॥
कृपा करो दीनन सुखदाई वेग खबर लो आई॥रा०।
तुमतो सब के अंतरयामी मैं मूरख भ्रम छाई ॥रामा०
कमला प्रभु को शीस नवावे क्यों मनसे विसराई ।रा०
रामा मोहे भूली डगर बतादो ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ ३१ ॥

रामा मेरे कैसे चलूं मैं हारी ॥ टेक ॥
चलत २ कबहू से कहती छूटे न माया प्यारी॥रा०
सार माल सब छोड़ चली हूं लादी है पाप पिटारी॥
पाप ताप की लईरे गठरिया होगया बोझा भारी॥रा०
तुम से दीनानाथ दया कर करदे बेड़ा पारी ॥रा०॥
कमला विनती करे दयानिध सुनियो टेर हमारी
रामा मेरे कैसे चलूँ मैं हारी ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ ३२ ॥

मन क्यों ना तू हर से मिलतारे ॥ टेक ।
हरके मिलने की राह सँवारो क्यों घर में गलतारे ।

चारों दिसि बाड़ी फूलनकी क्यों कांटों में चलतारे।२
सीधी राह देख स्वामीकी क्यों मूरख दुःख भरतारे
करना मेहर दीनदयाला शरन गया नहीं फिरतारे॥म०
कमला चरणकमल बलिहारी यह हर मन नहीं मरतारे।
मन तू क्यों नहीं हरसे मिलतारे ॥ ५ ॥

भजन लावनी नं० ॥३३॥

मुख रामइ रामइ राम कहो सखि मेरी ॥टेक॥
है पूरणब्रह्म अनन्त नाम जिन कोरी
जस गावैं वेद पुराण ध्यान धर केरी ॥ मुख०
कर कर के झूठी बात जन्म बीतोरी ॥
अब छोड़ो मिथ्या बचन भजन सुन लोरी ॥मुख०
इस भजन की ऐसी लाभ सुनो मेरी प्यारी ।
सुनलें जब दीनानाथ भक्ति दें न्यारी ॥मुख०
करती हो रास विलास बजा के तारी ।
हँस हँस के गावो गीत मधुर धुन सारी ।मु०
कमला कहती कर जोर सुनो मेरी प्यारी ।
मैंने राम राम रस कह्यो न मानो गारी ॥
मुख रामइ २ राम कहो सखि मेरी ॥ ५ ॥

भजन नं०॥३४॥

श्रीपति जी भरोसा है तुम्हारा ॥टेक॥
करूँ अरदास सुनलीजो लिया तेरा सहारा॥१॥
पड़ी हूँ जाल मायाके नहीं निकसने की वारा॥श्री०॥

निकालो बीच सागर से करो भवधार पारा ।
सुनो हर वीनती मेरी पड़ी मैं बीच धारा ॥
सदा सुनते हो दासों की न करते आप वारा ।
कहैं करजोर के कमला करो मेरा गुज़ारा ॥
श्रीपति जी भरोसा है तुम्हारा ॥

भजन नं० ॥ ३५ ॥

सुख सुनते संत सुजान होय धुनि अनहदकी भारी। टेक।
जिन रटलिये श्री ओंकार हटादी मायाकी क्यारी। होय
जहां होरहे अद्भुत राग गावैं धुन होरही झनकारी॥होय
वहां होय रही जय जय कार बिसरगई मुनिजनकी तारी।
तहां शब्द स्वरूपी आप विराजैं जोत रूप न्यारी॥होय०
प्रभु निरंकार निरलिप्त सदा रहते हैं सुखकारी। होय०
कमला कहती कर जोर करो प्रभु भवसागर पारी॥
होय धुन अनहद की भारी॥

भजन नं० ॥ ३६ ॥

अनहदकी झनकार भई दासनने मनमाहिं गहीरी॥टेक
घंटा शंख मृदंग बांसुरी अनहद की धुनि न्यारी २ ।
तुरातान नाद धुनबाजे शब्द होय जहां जयजयकारी ॥
भक्त रहे भरपूर प्रेममें मधुर २ धुन सुनत सदारी।
जो इसमें लौलीन भयेहैं, विसरगई जगकी व्योहारी॥
होय मगन अमृत रसपीये उनकी माया जगसे न्यारी।

हो लौलीन ईश प्रभु में देखै वोई अविकारी ॥
कमला ऐसे भक्त की महिमा कौन कहै । को करत
बखानी भक्त सदा हरके अधिकारी ॥ तू मूरख जड़
नार बिचारी ॥ अनहद० ॥ ४ ॥

भजन नं० ॥३७।

आतमपद योजन खटचारी कैसेपहुँचे जड़मत नारी॥टे.
जोगध्यानकी सार न जानी नइ नइ बातें अपनी तानी॥
क्षमाकरो प्रभु चूक हमारी।आसलगीहै नाथतुम्हारी॥
पहुँचनको अभ्यास करोतुम कौन कठिनहै पंथ अनारी।
केते काज होंय या जग के देखो अपने नैन निहारी ॥
ध्यानधरो हरके गुणगाओ देखो या में लाभ कहारी ।
वे प्रभु दीनदयाल जगतमें देयं भक्ति वरदान बिचारी॥
करअनुराग पड़ो चरणनमें पंथ कुपंथ न आवें वारी ।
शरणगये की बांह गहैं प्रभु सुन मूरख मतिमंद गंवारी॥
चरणदास सुखदेव गुरूने भांति के वेद उचारी ।
कमला जगमें क्यों भूली है देख प्रेमपद कैसाभारी।आ.

भजन नं० ॥३८॥

कहोजी साधो अनुभव कैसा आया ॥ टेक ॥
दायें रवि बायें शशि आया।सुखपति सन्मुखपाया।क०
पृथ्वीजल और अगिनपवनमगगगनमंडल फिर धाय॥
प्रथम तो एक तरुवर देखा डालपात नाहिंछाया ।
कहोजी साधो वनफल कैसे खाया ॥ कहोजी० ॥

आगे चल एक सरवर देखा नीर नजर नहिं आया।
हमारा मन वाही में मलमल न्हाया ॥ कहोजी० ॥
बिना धरण एक मंदिर देखा द्वारपाल नहिं पाया।
देखो जी एक तपसी धाया ॥ कहोजी० ॥५ ॥
सुन बिच शहर शहर बिच नगरी अलख निरंजन पाया।
हमारा मन आनन्द उर न समाया ॥कहोजी०॥६ ॥
धन्य भाग उन सन्तजनों के पूरन पद मन लाया।
साधो जी कमला ने जन्म गंवाया ॥कहोजी० ॥७ ॥

भजन नं० ॥ ३९ ॥

लख फुलवाड़ीरी सुरत मालिनिया ॥ टेक ॥
एक एक फूल खिला लाखों का रंग देख रमजायरी नज़रिया ॥ लख० १ ॥ मन मधुकर भ्रमता ही डोले रस पीवन हारीरी सुरतिया ॥ लख० २ ॥ रस से जाय अनेक उपद्रव पान करै जब आवेगी लहरिया ॥ लख० ३ ॥भ्रमर वासना लेत सदाहीं पिये फिरे जग फीकीरे भमरिया ॥ लख० ४ ॥ सुरता निरख फूल फल जाके कैसी लिखी जैसी चन्द्र की उजरिया ॥ लख० ५ ॥ प्रभु पद चरन कमल फुलवारी क्यों नहीं सींचत जायरी कमलिया ॥ लख० ६ ॥

भजन नं० ॥ ४० ॥

फुलवा बीनन जाओरी सुरतिया ॥ टेक ॥
पांचपचीसपहरबाठाडेबागियाकीरखवारीरासुरतिया ।

केहरवनएकबाटअनोखीपहुँचैगाकोईसतगुरुसखिया ॥
फूलरहीचहुँदिशिफुलवारीबीचबनीदासोंकीनगरिया ।
निर्मलताफलफूलसुहाईमंदसुगंधजहांचलतबयारिया॥
एकएकपुष्प केनामनिरन्तरधारकंठजनहोरहेसुखिया ।
कमला पुष्पसुगंध ने जाने हरिचरणनकी लेतरी बलैया॥

भजन नं० ॥ ४१ ॥

दीनबंधुभवसिंधु तरनको।आसाहै प्रभु के चरननकी॥टेक
अशरण शरण दीनहितकारी जानतहोप्रभुजनकेमनकी,
करुणानिधि की बान यहीहै सदा सहाय करें भक्तनकी॥
मुनिजन सिद्ध ध्यानधर देखै अभिलाषा प्रभुकेदर्शनकी।
व्यापक ब्रह्मसकल उरवासी जीवनराखै सुध या तनकी॥
करजोडूँ विनती सुनलीजो लज्जा राखो प्रभु कमलाकी॥

भजन नं० ॥४२॥

हरि हमको पार लगाओ जी ॥ टेक ॥
बांस बराबर बाढ़ रहो जल बल्ली है न खिवैयाजी ।
टूटी नैया खेव पुरानी बोझा है अतिभारी जी ॥
भवसागर की धार कठिन है अटकी नाव छुटाओजी ।
बीच समुद्र के नाव पड़ी प्रभु आप खिवैयाआओजी ॥
चरण शरण अनुराग हरीके कमला तुम तरजाओजी ।
हरि हम को पार लगाओ जी ॥ ५ ॥

भजन नं० । ४३ ।

मन हरकी बूंटी पिया करो ॥ टेक ॥

ज्ञान पियो हरी नामकी बूंटो शंका मनकी दूर करो ।
ज्ञान की कूंडी सत्यका सोंटा निश्चय कर मन साफ करो॥
विरति विवेकसे घोटन लागो पापताप सब त्यागकरो ।
कलश नियम अरु संयम साफी बुद्धि पात्रमें ज्ञानभरो॥
कर सतसंग पियो हरिजन मिल मुदता उरके बीचधरो।
पीकर हो जब गरक नशे में हरिके दर्शन किया करो॥
हरिरस बूंटी सुनरी कमला मागबड़े जिन ध्यान धरो ।
मन हरकी बूंटी पिया करो ॥ ७ ॥

भजन नं० ॥ ४४ ॥

दासन की अँखियां लाल भई ॥ टेक ॥

पीवै भर२ हरि रसप्याला नित नव हरकी प्रीतनई॥ १॥
पियेगा सुभागा तजेगा अभागा जिने पियो वोसन्तसई॥२
प्रेमपियाला प्रगट जानमन नाहक उमरविनायदई॥३॥
पीकर भक्त भये निष्कामी जगकी ममता भागगई ॥४॥
तप्त भये तप तेज भक्तके जोत रूप दरशात भई ॥५॥
हरिचरननमें शीशझुकाओ कमला कया मन ठानलई॥६
दासनकी अँखियाँ लाल भई ॥ ७ ॥

भजन नं० ॥ ४५ ।

साधुन के नैना प्रेम भरे ॥ टेक ॥

आतमपद स्थिर हो बैठे प्राण अपान विचार करें ।

नित नवप्रीत परमपद निरखें परमातमका ध्यानधरें ॥
अचलसमाधिभये मानो भूधर चहुँदिशि जय२ शब्दहरें
प्रेम उमग लोचनभये वारि लहरउठें मानो सिंधुभरें॥
प्रेम प्रवाह कोट सम सागर ऐसो को कवि वरन करें ।
जो नरदास भये दासन के तिनके कमला चरन परें ॥

भजन नं० ॥४६॥

जिन आतम का अनुराग वोही नर जाग रहे ॥टेक॥
सांचा जगमें बोलना और सांचाही व्यौहार । सांचे पदमें स्थिरहुए सांचाही दरबार ॥ वोही० १॥तत्वमसी उपदेश का गुरुसे सुनते ज्ञान । मनन निदिध्यासन करे आतम होवे ज्ञान ॥ वोही २ ॥ सकल उपाधी से रहित त्याग सकल व्यौहार । अपने आतमके विषय शुद्ध स्वरूप निहार ॥ वोही ३॥ ईश्वरके प्रकाशसे यह जग जगमग होय । कमला हरि के चरण की क्यों नाहिं निश्चय होय ॥ वोही नर जाग रहे ॥ ४ ॥

भजन नं० ॥४७॥

हरिनाम विना धिक जीना है ॥ टेक ॥
वहांसे आये बचन भराके क्या जगमें तैं चीना है । हरि०
मानुषतन दुर्लभरे भाई हर बिन जन्म विहीना है । हरि०
कायागढ़ आतम का आसन जिसमें मन परवीनाहै। हरि.
मन प्रवीन जभी तो होगा बुद्धी रंगे नवीना है । हरि०
बुद्धीको मन आगे करले सुरत खोज मणि लेनाहै हरि०

बिन सतगुरु सतसंग बिना हर मिले नहीं मनहीना है। हरि.
धिक जीवन धिक्कार री कमला मायामें मन दीना है। हरि.

भजन नं० ॥ ४८ ॥

झूठा जगका ख्याल अनाड़ी आतमपद रंग भीना है॥ टे०
आतम पद मुक्ती का दाता जिसने आतम चीना है।
वोही जन रंग रहे भक्ती में जिसने मारग लीना है॥ १॥
ब्रह्मज्ञान के साधन में मन उनका हर आधीना है।
शुद्ध स्वरूप हुये इस जगमें जिनकी सुरत नवीना है॥ २॥
ऐसे स्थिर हुये ध्यान में मन उनका लौलीना है।
चेतन चितकी पूरन मनकी पूरन पद दृढकीना है॥ ३॥
हरके चरण कमल मन लाओ नरतन उसने दीना है।
यह तन पाय भजन नहिं कमला वृथा जगतमें जीना है ४

भजन नं० ॥ ४९ ॥

मन क्यों नाहिं खोजत है तनमें ॥ टेक ॥
खोजत खोजत राह मिलैगी जो निश्चय करले मनमें॥ १
नाभि कमल में है कस्तूरी मनमृगा फिरता बनमें ॥ २॥
पृथ्वी अगन अकाश पवन जल ये पांचों वसते तनमें ३
काया का कलबूत बना है वास करै पंछी जिसमें ॥ ४॥
खोज करे से स्वामी पावै जाय वसो मन चरणन में॥ ५॥
कमला चरण कमल बलिहारी वास करो प्रभु मेरे घटमें ६

भजन नं० ॥ ५० ॥

मन भजन करो जगमें क्या है ॥ टेक ॥
चारों दिश तू भ्रमता डोले हरभक्ती धारो मनमें।

राजस तामस दोनों त्यागो चित्तधरो शान्ती पदमें ।
कर अनुराग लखो हिरदे में प्रेम लहर आवै तनमें ॥
ज्ञान दृष्टि कर ध्यान लगाओ सुरता राख हरी पदमें ।
कमला हरकी शरण गहोरी शीस धरो हरिचरणने में॥

भजन नं० ॥५१॥

इस लगन का लगना सहज नहीं ॥ टेक ॥
मन चंचल थिर नेक न होवे आशा तृष्णा फैलरही ।
मन माया का त्यागन करता बुद्धी इनमें विरम रही ॥
तामस तनकछु बननहीं आवैसुरती किसविध जायकही।
मायाका परवार हटे तब कृपा करैं जब आप हरी ॥
हरिहर भजनके बड़े बड़े योधा कमला दृढ़एक नामवोही

भजन नं० ॥५२॥

मेरा मन निश्चय नहीं होय मैं याको समझायरही।टे०
मनके हारे हार हैरे मनके जीते जीत । जब लग मन-
दृढ़ता नहीं धारे कैसा प्रेम कैसी प्रीत ॥ मैं याको ॥१॥
मन विषयन को त्यागे जब निर्मल बुद्धी होय।अहंकार
की जड़को काटे,जब मन आनन्द होय ॥ मैं याको॥२॥
बुद्धी निर्मल होय जब जो मनको हो अनुराग । ज्ञान
इन्द्रिय जाय जगावे सुरती चेतन होय।मैं याको ॥३॥
सुरता मारग सुगम है जो त्रिकुटी होके जाय । गगन
मंडल में नौबत बाजे धुनसुन रहे लुभाय॥मैं याको०४
हरिचरणने का करो आसरा कमला मन समझाय ।

पारब्रह्म का ध्यान लगाओ हर तेरी करैं सहाय ॥
मैं याकू समझाय रही ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ ५३ ॥

तुम जाओ गगन में रमो सुरत निरखो निरधारा ॥टेक
तुम देखो मारग जाय सुगम का अगम अपारा।
वो क्या क्या दीखें वस्तु देखमन करो विचारा ॥१॥
वहाँ कैसे पाँचों तत्व अगन और पवन कराला।
जहाँ कैसा जल प्रवाह गगन कैसा सुन्कारा ॥२॥
जाग्रत सुपना जान जगत में कौन तुम्हारा।
सुषुप्ती और तुरियातीत परमपद का अधिकारा॥३॥
सुर चलते दोनों संग रवि दायें शशि बाँया।
घर देखो त्रिकुटी ध्यान जोतका दर्शन पाया ॥४॥
कमला कहती कर जोड़ सुनो मेरी करतारा।
मेरे जो कुछ औगुण होंय हरो कीजै निस्तारा॥५॥

भजन नं० ॥५४॥

होयँ मनकी नगरिया में नये नये राग ॥ टेक ॥
कबहू मन जाचक हो गावे, कबहू गावे तूरा तान।
कबहू स्वर्ग पताल उड़ावे, कबहू लेलियो वीणाहाथ॥१॥
मन चञ्चल यह भ्रमता डोलै नेक न आवे मेरे पास।
ऐसी जड़ता मूरख मनकी है हर कैसे होंगे पार ॥२॥
कबहू मन बक ध्यानी होके जगमें करता है उपदेश।
एक घड़ी हरनाम न लेता ऐसा मूरख और अचेत॥३॥
अबहू सोचोरे मन मेरे यह जग कुछ नहीं है आसार।

आतम पद में ध्यान लगाओ जो चाहो अपना उद्धार॥
दीनबंधु मैं शीस नवाऊं मन के औगुण गिनियो नाह ।
कमलाचरण कमल वलिहारी विनती सुनियो बारम्बार॥

भजन नं० ॥ ५५ ॥

आरती मन साज करो हरकी ॥ टेक ॥

मनसा पूजन आतम ध्यानी, परमातम की आरति की॥
तनको प्यार जतनकी झारी कर सुरतासे बाहरकी ।
सत्य धर्म के चावल चंदन प्रेम फूल माला गलकी ॥
बुद्धि को दीपक ज्ञानकी बाती कर कपूर संजम दृढ़की ।
नेह नीर जलझारी भरके प्रीति सहित विनती हरकी॥
शांतीरूप सन्मुख हो हरके मुद मंगल धुन है हरकी ।
कमला दासी आरती गावै भूल चूक छमियो चितकी॥

भजन नं० ॥५६॥

मैं करती बारम्बार नमो नारायण हे स्वामी ॥टेक॥
उठ प्रात रटे हरनाम प्रभू घट अंतर के यामी ॥१॥
तुम अगम अगाध अनाद सदा रहते हो निष्कामी ॥ २॥
तुम अस्थिर आसन मार अचल हो बैठे एकधामी॥३॥
तुम घटघट व्यापक ब्रह्म सदा वसते हो अनुगामी॥४॥
कमला को कर निरदोष तार भव दो यह पिराणी ॥५॥

भजन नं० ॥५७॥

मेरे वास करो घट आय सरस्वति तू जगकी माता॥टेक॥
करती हो घट घट वास बुद्धिकी तूही है दाता ॥१॥
तुम करती कारज सिद्ध संग लिये गणनायक नाथा॥२॥

भक्तिदृढ़ जिनकू दिया निरमल हुये उनके गाता ॥३॥
करो तुम सबकी पौनाही जगत की माता सुखदाता॥४॥
कमला कहे करजोर दान दो बुद्धी की दाता ॥५॥
सरस्वति तू जगकी माता ॥ ६ ॥

भजन नं० ॥ ५८ ॥

पारब्रह्म जगदीश उजागर देव निरंजन शुभकारी। टेक॥
स्थिर आसनअगमतुम्हाराअचल समाधिलगी भारी॥
कोई जानसके नहिं तुमको गतिअपार माया न्यारी॥ १॥
हो सब में और सबसे न्यारे शक्ति तुम्हारी है जारी।
ऐसी माया प्रबल तुम्हारी भूल रहे सब नर नारी ॥२॥
कैसे ध्यान धरैं घटधारी ध्यान न आवे गिरधारी।
कैसे खोजें तनकू स्वामी मन चंचल है छलकारी॥३॥
संतसभा मिल हरगुण गावै शब्द होत जहां अतिभारी॥
पारब्रह्म में लीन भये और आवागमन मिटा सारी ॥४॥
कमला ऐसेइ पारब्रह्म में मन लौलीन करो प्यारी।
लगें झकोले जाय भक्त का छिनमें तू होती पारी ५॥

भजन नं० ॥५९॥

परम पद कैसे मिले आली ॥ टेक ॥
माया जड़ परवत से ऊंची झूमरही डाली। परम० १
झूठे फूल पत्र फल जामें नेक नहीं लाली ॥परम० २
मीठी मंद सुगंध लोभ की मोह घटा काली ॥परम० ३
या तरवर की करुई छाया सोय रहो माली॥परम० ४
जीव कृतारथ हो नहिं कमला आन फँसा जाली॥परम०
परमपद कैसे मिले आली ॥ ६ ॥

भजन नं० ॥ ६० ॥

पदसरोज रुच सुख हृदेमें ब्रह्मसुता को पावोरे ॥टेक॥
कर स्नान धर्मको साधे आसन सेत बिछावोरे॥पद० १॥
पदसरोज परिवार घट भीतर सब कारिख धुलजावोरे।
नेहको नीर प्रेमके पटुका प्रीत के पुष्प चढ़ावोरे ॥२॥
संयम वसन विभूषण मनके शीलको तिलक लगावोरे।
कमला हरसे प्रीति लगाके मनकी तपत बुझावोरे ॥३॥

भजन नं० ॥६१॥

मिले कैसे पारब्रह्म जगदीश ॥ टेक ॥
वह तो प्रभु त्रिभुवनपति स्वामी त्रैलोकी के ईश॥मिले०
शुक सनकादि शेष और नारद गावें हैं जगदीश। मि०
गुप्त भेद कुछ प्रघट न सूझै कैसे नाऊं शीस॥मिले०॥
मन चंचल चित जमन न पावे कैसे मिलै जगदीश।
कमलाकर जोरे विनती करै सुनियो त्रिभुवनईश॥मिलै०

भजन नं० ॥६२।

जान के जग भूलारे मन तू ॥ टेक।
पारब्रह्म से प्रीति न कीनी मिलै न पद निरमूला॥रे०
जब तक सुरत सनेह न धारे मिटै न मन की शूला।
देखो नैन परम पद पावन अगम अगाध अमूला॥
जब अनुराग होय हिरदे में जानो हरि अनूकूला।
कमला देख काल नियराना जान पूछ मन भूला॥

भजन नं० ॥६३॥

बे ख़बर क्यों हुवारे मन तू ॥ टेक ॥
माया का परवार बड़ा है क्यों खेलो तुम जुआ॥रे०

अब तुम बाजी हार जाओगे खोद रहे तुम कुआ।
जान बूझ तुम गिरत कूप में कालबली सिर हुआ॥
मानुष जन्म बहुरि नाहिं पाओ क्या लगा रहे दुवा।
कमला खेलत उमर गमाई हाथ दई क्या हुआ॥रे०

भजन नं०॥ ६४॥

नहीं कुछ या मन की परतीत॥ टेक॥
खन में रोवै खन में सोवै खन में होत अतीत॥न०॥
राम भजन में चित दे भाई अब तो बाजी जीत।
समझायो समझै नहीं बौरे तू अपनो नहीं मीत॥
हम तो कहत हर ध्यान धरो तुम गाय उठे अब गीत।
कमला जग में मित्र आपनो किस को जाने मीत॥

भजन नं० ॥६५॥

चेत मन क्या सोवै सुख नींद॥ टेक॥
तुम तो सोवो सुख की निद्रा काल रहो अब गीद॥चेत०
परम गती की राह निहारो हो रही सुंदर सीद।
जो तू चाहै मुक्त आपनी खोल नैन की नींद॥
कालबली तेरे सन्मुख ठाडा प्राण निकाल बींद।
कमला भवसागर की धारा सूझ पड़े नहीं सीध॥

भजन नं० ॥ ६६॥

करेंगे मेरी दीनानाथ सहाय॥ टेक॥
पारब्रह्म जगदीश्वर स्वामी कारज करत बनाय॥ क०
राख भरोसा नारायण का संशय सब मिट जाय।
वे तो स्वामी अंतरयामी व्यापक हैं घट माहि॥
विश्वपती प्रभु पार लगावैं आस करो मन माय।

कमला क्यों धीरज कू त्यागे हर हर करती जाय ॥क०

भजन नं०॥ ६७ ॥

टेर मेरी सुनियो हे जगदीश ॥ टेक ॥

संत भगत तुम्हरे गुनगावैं नारद और सुरईश। टेर॥ १॥
दास तुम्हारे सदा सुखारे नावैं चरणन शीस । टे०॥२
सदा सहाय करो भक्तन की पारब्रह्म जगदीश ॥टे० ३।
तुमबिन कौन सुनै मेरे स्वामी तुमहीहो मेरे ईश॥टे० ४॥
कमला चरणन शीस नवावैं सुनियों जगत्पति ईश ॥५॥

भजन नं० ॥६८॥

धरोरे मन विश्वपती का ध्यान ॥ टेक ॥

जिन मन से गह नाम समारे पूरण होगये ज्ञान॥ १॥
नित नव प्रभु अनुरागि हृदयमें नेक नहीं अपमान॥२॥
जब तू ध्यान धरै उन हरको विमल होय मन प्रान ३॥
प्रेम प्रीति कर रीति बढाओ जब होगी पहिचान॥ ४॥
कमला चरण कमल मन दे ले झूठा जगकू जान । ५॥

भजन नं० ॥६९॥

करोरे मन नारायण से प्रीति ॥ टेक ॥

नारायणकी बांह बड़ी है पकड़े जो हो परतीत॥करो०।
सत्य नाम नारायण जानो हे मन छोड़ अतीत ।
नीति विरोध कबहु ना कीजै यामें बड़ी विपरीत ॥
नारायण से काम सदाई झूठी जगकी रीत ।
कमला नारायण स्वामी को क्यों नाहिं करती मीत ॥

भजन नं० । ७० ॥

नारायण का देखो वतन तुम ॥ टेक ॥

नारायणके नगर निकाई वहां जाय मन लाओगे॥ तु०॥
शीतल मंद सुगंध पवन जहां वहां जाय विरमाओगे।
आस पास भक्तन के आसन देख महासुख पाओगे॥
होरही जय जयकार चहूँदिशि आनन्द मन उपजाओगे।
कमला सुरत सम्हार वतन के सतसंगत फल पाओगे॥
तुम नारायण का देखो वतन ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ ७१ ॥

भज मन नारायण नारायण ॥ टेक ॥
नारायण को नाम निरंतर रट नारायण नारायण०॥१॥
नारायणकोभजन सुतंतर भज मन नारायण नारायण॥२
अनुराग बढ़े उर अन्तर दीख पड़े जब ही नारायण३
रूप देख हर प्रकट होय जब तब उमगे मन नारायण४
कमला मन थिर कर के बैठो देय परम पद नारायण५

भजन नं ॥ ७२ ॥

कौन हरै दुख नारायण विन ॥ टेक ॥
वे दयाल संकट के हरता कौन सहाय करैगा हरविन
पैदा कर प्रभु पालन करते तू फिरता जगभूले हर विन
जग में जन्म भजनाहितलीनो भूठ कपटमनदीनोहरविन
नारायण सब के घटवासी जिविन जन भूला तू हर विन
कमलासोचसमभकरचलनाकालबलीसिरआयोहरविन

भजन नं० ॥ ७३ ॥

नारायण भज नारायण भज नारायण की शरणगहोरे।
दीनानाथ दीन हितकारी दीनन की सुधलेत सदारे।
दीन होय के हर पै आयो तेरे औगुण नाहिं गिनैरे॥१॥

दया धर्म के पालनहारे दयासिन्धु देते सुख सारे ।
तू मूरख कछु मरम न जाने क्यों फिरता है मारे मारे॥२
सारी उमर धंदे में खोई अब तो हरका नाम जपोरे ।
वे प्रभु दयादृष्टि कर हेरें जब ही बेड़ा पार लगेरे ॥३॥
कमला शरण गहो उने हरकी और खिवैया कौन भयोरे।
चरण कमलका करो आसरा सत्य नाम है सार वोहीरे४

भजन नं० ॥ ७४ ॥

दीनदयाल दयाकरदो अबआशा लागरही प्रभु तेरी॥टे.
अशरणशरणदीन हितकारीशरणगही हमनाथतुम्हारी।
तुमबिन कौन सहायहमारी बेगहरो दारुणदुखभारी ॥
काम क्रोध मोह अधिक सतावै माया को परवार बढ़ारी।
कृपादृष्टिकर मोह निहारो विषयन में मन लिप्त भयोरी ॥
मैं मतिमन्द जगत में आई ऐसे प्रभु की सुध बिसराई ।
इन्द्रीदमन भई नहीं स्वामी जानत हो तुम अंतरयामी ॥
कमला प्रभु से करै प्रार्थना विनती मेरी श्रवण सुनो जी।
अपनी ओर निहारके स्वामी नइया पार करो प्रभु मेरी॥

भजन नं० ॥ ७५ ॥

नैया मेरी प्रभु तुम ही खिवैया ।
तुम्हरे हाथ बेड़ा पार लगैया ॥ टेक ॥
भवसागर की धार कठिनहै टूटी नाव जाय कौन जुड़ैया॥
ठाड़ीमलाहनअरजकरत है ना घरघाटनदुसराखिवैइया
भारी बोझ भरो मेरे स्वामी तापर चलती अति पुरवैया॥
तुम से है अरदास हमारी पार करो यहि आश गुसैयां ।
कमला चरणकमलबलिहारीतुमबिन मेरो कौन सुनवैया

भजन नं० ॥७६॥

नइया नाम की सिद्ध चलैया जापे बैठे जन पारजवैया॥टे.
सतकी नाव धर्म का बेड़ाज्ञान की कलकी कीलजड़ैया॥
संयम नेम सुरतकी डोरी ताहि पकड़ हरिजन चढ़जैया॥
गुरुपद भक्त मनोहर बल्ली ज्ञानवैराग तो होत खिवैया
विद्या बुद्धि विवेक शांती दृढ़ सोहत सुंदर सार नवैया॥
कमला चरणन शीस नवावै हर बिन कौन गहैमेरीबइयां

भजन नं० ॥ ७७ ॥

गहो हर आय मेरी बैयाँरे ॥ टेक ॥
नाथ यह सागर है अति भारी अटकरहीजायमेरीनैयारे।
नाथ यह घन घरजे अति घोर रहो नभछाय अंधेरियारे
नाथ अब कंपतहै मन मेरा चलै चहुँ ओर पुरवैयारे ॥
नाथ तुम सुनियोटेरहमारी दमक दिखलाय दामिनियारे
नाथतुमसबकेकाज सम्हारो करोकुछख्याल मेरीबिरियाँरे
नाथकमला को डरहै भारी खड़े यमराज मेरीबाटियाँरे।

भजन नं० ॥७८॥

हरी के नाम की नैयारे ॥ टेक ॥
गहो मन नाम की नैयारे गुरु का ध्यान खेवैयारे॥ह०
लगादो प्रेम की डोरी प्रीति की रीति की नैयारे॥ह०
लहर आती समुंदरकी पड़ी अधबीच मेरी नैयारे॥ह०
धरो मन ध्यान ईश्वर का करोगे यादउस बिरियाँरे॥ह०
कहै कर जोरके कमला करो हर पार मेरी नैयारे॥ह०

भजन नं ॥ ७९ ॥

क्योंरे मन क्या हो रहा है नशेमें ॥ टेक ॥
छान पियो हरिनामकी बूँटी क्योंरे मन क्याहै मदिरामें।

मद्की खुमारी सारी बीमारी योंही उमर गइ झगड़ेमें॥
पीले प्याला हो मतवाला देख रंग कैसी लाभ भजनमें।
मस्तमगनमन ध्यान धरोरेप्रेम उमग जल जायचरननमें
कमला छोड़ मद रस जगका तू प्राणपती को देखो घटमें

भजन नं० ॥ ८० ॥

मन अनाड़ी क्यों वाज़ी हारे ॥ टेक ॥
तुमतो वाज़ी हार चुके हो मनखिलाड़ी क्योंदावबिगारे॥
फाँसा फेंकोसत्त समझके जीत नहोगी कभीहरविनप्यारे
काम क्रोध की चौसर माढी लोभ मोह के दाव न हारे॥
चौसर मढलो सार नाम की दावपड़े कंचन भरलारे ।
कमला वाज़ी हरसे खेलो जीतजाओ हर होयँ तुम्हारे॥

भजन नं० ॥ ८१ ॥

नारायण की क्या माया न्यारी ॥ टेक ॥
सकल सृष्टि छिने माहिं रचावै ब्रह्मा विष्णु महामुनिभारी
जीवजंतु कोटिन वलधारी भांति भांतिके रंग अपारी ॥
पैदा करते पालन करते विनसत नेक न लागै बारी ।
जल थल पवनअग्नि शशिसूरजआपरहेहैंप्रभुनिरधारी
कमला देखो प्रभुकी माया छिनमें अंध छिनक उजियारी।

भजन नं० ॥८२॥

नारायण की उपमा भारी ॥ टेक ॥
व्यास सूत सौनक विस्तारी तुलसी दास संक्षेप उचारी
नारद शारद शेष महेश वालमीक कछु जुगत विचारी
योगि वशिष्ठ ज्ञान प्रगटायो चरणदास मुखमाह समारी
कौन भांति कवि ताहि बखाने शेष सहस मुख पावैनपारी

कमला कबहु नेक सुनो तुम याही जगतसे हो जायपारी॥

भजन नं० ॥८३॥

मन मूरख नादान हुवा चलने की आगई है बारी॥टेक॥
काम क्रोध मदलोभ भुलाना ऐसेइ उमर गई सारी।
सुख संपत धन काम न आवै करना चहिये उपकारी॥
नारायण को करो संगाती जबही बिपत जाय सारी।
चलने की तुम करो तयारी गठरी बाँध धरी भारी॥
सार माल तो त्याग दिया और बाँध लिया है बेकारी।
कमला रस्ता बड़ी कठिन है काहे हरको दिया बिसारी॥

भजन नं०॥ ८४।

भजोरे मनतुम नारायणको बिपत जाय तेरी सारी॥टेक
वे दयाल संकट के हरता पालत हैं सृष्टी सारी॥ ॥१।
प्रभु प्रसिद्ध समझ मन मूरख जिसकी माया है न्यारी।२
नारायण को भक्ती प्यारी क्यों नहिं करता तू उपकारी।३
करुणामय हरि दीनदयाला संत भक्त के हैं हितकारी।४
ऐसे प्रभुको नामरी कमला लेय नहीं तो है धिक्कारी।५

भजन नं० ॥ ८५ ॥

प्रभु पीतम से प्रीति करो मन वोही हरि तेरे हितकारी।
काम क्रोध मद लोभ नसाकर नीति से प्रीति करो भारी॥
प्रीति करो हर होयं सहाई संशय सकल हरें प्यारी।
जब अनुराग होय उर अन्तरहोयँप्रसिद्ध वोहीभवधारी॥
प्रीति पुरातन सोच लेवो मन किसने माया विस्तारी।
कमला प्रीति लगै जब हरसे प्रेम उमंग होती वारी॥

भजन नं०॥ ८६॥

हुवा जिगर में जखम बानका कैसे पूरा हो भाई॥टेक॥

माया बान भेद से बींधे ममता होरही दुखदाई ॥
तृष्णा तनमें तपत बढ़ावै क्रोध अग्नि प्रगटाई ।
सत्य धर्म के पालनहारे तुम प्रभु सबके सुखदाई ॥
करो न्याय नारायण स्वामी यह इंद्री हैं दुखदाई ।
वे प्रभु पूरा करैं जतन को कमला तू क्यों घबड़ाई ॥

भजन नं० ८७॥

उस नारायण का नाम तू क्यों नहिं लेता मन पापी॥टेक॥
हरीको भजले बारंबार भूमि जिन चरनों से नापी ।
वे ऐसे दीनानाथ तू मन से क्यों न लहर थापी ॥
जभी तू हरके सन्मुख जाय तू उनसे थर२क्यों कांपी।
बड़ा इस माया का परिवार अभी तू उनसे नहीं धापी॥
कमला जपती वोही नाम बड़े दासन में हैं जापी ।

भजन नं० ८८ ॥

सुध लीजो दीनानाथ गही मैं शरणागत तेरी ॥ टेक ॥
तुम कैसे दीनदयाल तनक नहीं सुनते हो मेरी ॥ १ ॥
मैं करूँ ढिठाई नाथ तुम्हारे चरणों की चेरी ॥२॥
तेरी गतहै अपरम्पार नहीं कछु समरथ है मेरी ॥३॥
मैं बुद्धिहीन मतिछीन न जानूँ क्या महिमा तेरी ॥४॥
यह कमला विनती करै दया कर कीजे मत देरी ॥५॥

भजन नं० ॥ ८९ ॥

प्रभुकी गत अपरम्पार थकित हुवे मुनिजन मनमाहीं ।
सुमरन कर होगये पार गति किनहूँ नाहिं पाई ॥१॥
सदाशिव धरते हरिको ध्यानगति उनहूँने नहीं पाई॥२॥
जसगावैं वेद और व्यास शेष मुख बरणन नहीं जाई ३॥

जब ऐसे हारे सिद्धजीवकिस लेखे में आई ॥ ४ ॥
कमला कहती करजोड़ तुम्हारी शरणागत आई ॥५॥

भजन नं० ॥९०॥

तुम सहस्र कान सुन मेरी नारायण से विनती ॥टेक॥
करजोडूँ हे महाराज करो मेरी दासन में गिनती ॥१॥
भक्ति दृढ़ हमको देवो होय मेरी दासन में उनती॥२॥
प्रभु दयादृष्टि करदेवो रमै उर अंतर में भक्ती ॥३॥
जहां अलख भंडार निधान दान हमको दीजोमुक्ती॥४॥
कमला की विनती सुनें बड़ी सामिरथ है उनकी॥५॥

भजन नं० ॥९१॥

प्रभु जी मेरे नैना बीच बसो ॥ टेक ॥
भृकुटी माहिं निहारे तुमको दृष्टी माँह बसो ॥प्रभु०
सुरता जाय गगन फिर आई वे बैठे आप हँसो ॥प्रभु०
मन चंचल चित जमन न पावे याको नेक कसो॥प्रभु०
बुद्धी विमल होन नहीं पावे यामें आय धसो ॥प्रभु०
कमला मन थिर करके बैठो क्यों जगमाँहि फँसो॥प्रभु०

भजन नं० ॥ ९२ ॥

सुनी हर हमने तेरी बड़ाई ॥ टेक ॥
तेरी बड़ाई भक्तों की सहाई सुनी हर हमनेतेरीबड़ाई
पापों के मारे भूमी घबड़ाई करी जाय तुमने कैसीसहाई
साधु बसाये मूर्ख घटाये करीजाय तुमने कैसी ठकुराई
द्रौपदी पुकारी लज्जा हमारी चीरदियातुमने कैसेबढ़ाई
माया तुम्हारी न पावे पारी हुई तिहुँपुर में तेरी प्रभुताई
कमला विचारी करतीपुकारीकरोनाथ अबतोमेरी सहाई

ठुमरी भजन नं० ॥९३॥

हरी मेरी बइयां गहो क्यों ना आई ॥टेक॥

बइयांगहोहमपइयांपड़तहैंनइयाहमारी अटक रहीजाय
सागर भारी नइयाहमारी तुमही खिवैया करो बेड़ा पार
मैं तो पुकारीसुनियोहमारीशरणतुम्हारी गही मैंनेआय
तुमतो सहाई करते सदाई मैं तक आइ गहो मेरी बांय
कमलातोदासीदर्शनकीप्यासीतुमअविनाशीदरसदोआय

ठुमरी भजन नं०। ९४॥

हर नहीं देखेरी डगरिया ॥ टेक ॥

काशी भी देखी अयुध्या भी देखी बन बन ढूँढीरी गुफैइया
मंदिर भी देखे शिवाले भी देखे कहीं नहींदेखीरीउजरिया
साधू भी देखे समाधी भी देखे कहीं नहीं देखेरी गुसइयाँ
धारा भी न्हाई जमुना भी न्हाईमनमेंन आईरी लहरिया
कमला कहे हर हमको बतादो हिरदेमें छाईरी अँधेरिया

भजन नं० ॥९५॥

हर बिन को हैरी सुनइया ॥ टेक ॥

दीनानाथ दया करदें जब तेरी सुन लेंगेरी अरजिया
वे हर हमको भूल गये हैं कैसेकर आवैरी सुरतिया ॥
नित उठ काज करो भक्तन के बर मेरी आईरी निदरिया
सुनियो टेर दयानिध मेरी तुमही से लागीरी सनइया
कमला कहे कर जोड़ नाथ सुन तुमबिन कोहैरी खिवइया

भजन नं० ॥९६॥

सोच मन देख इस जगमें नफ़ा क्या क्या उठायाहै॥टेक॥
रहा है लिप्त माया में भजन मन से गँवाया है ॥ १ ॥

किया बरबाद इस तनको न हरसे प्रेम लाया है ॥२॥
अरे मन सोचना चहिये काल नजदीक आया है ॥३॥
करो तुम ध्यान उस हरका गुरूने जो बताया है॥४॥
कुटम परवार धन माया नहीं कोइ काम आया है॥५॥
कहै हरदास सुन कमला नहीं कोइ साथ आया है॥६॥

भजन नं० ॥९७॥

वोही हरनाम है प्यारा भजो मन नाम निरधारा॥टेक॥
भजनसे होय उद्धारा जगत से होय मन न्यारा।
भजे यही नाम संसारा उतर जाय सिंधुसे पारा॥
अरे मन क्यों फिरै मारा नहीं कोइ रोकने हारा।
करो तुम कमला उपकारा होय मन विमल निरधारा॥

भजन नं० ॥ ९८ ॥

मन वैरागी हो अनुरागी हरसे प्यारा कोहै यार ॥टेक॥
प्रेम प्रीतिकर नीति दिखाओ उनसे छिपनाहै बेकार ।
माया मोह त्याग के प्यारे हरसे मिलनाहै ये सार ॥
कामक्रोध मद लोभ छोडके हरसुमरन से उद्धार ।
आशा तृष्णा तन से त्यागो मनको विषयनसे लोमार॥
मन चंचल हर ध्यान धरोगे जबही बेड़ा होवे पार ।
कमला हरको करो संगाती विकट पंथ से हो निस्तार॥

भजन नं० ॥ ९९ ॥

है मन समझो हरको प्यारे जगका झूठाहै यह ख्यालाटे.
मित्र तुम्हारे करें दुखारे उनमें फंस के है यह हाल ।
अपस्वारथको जग जानताहै परस्वारथ है कठिनसवाल॥

सतसंगतका यह फल भाई जिसमें अपना होय सँभाल।
सत्य धर्म में उमर बितादो झूठ कपट जी का जंजाल ॥
वो तो सब के घटकी जाने अंतरयामी दीनदयाल।
कमला अपना मनसमझाके सुमिरो प्रभुको वीलाकाल॥

भजन नं० ॥१००।

पीलेप्याला होमतवाला हरप्याले बिन सवाद क्याहै।टे.
छानपियो हरिरसका प्याला बनोभगत यहविवादक्याहै
प्रेम तरंग बढे जब भारी नशे भंगका फिसाद क्या है।
चढ़े खुमारी होय मगन सुनै शब्द धुनि यह नाद क्याहै॥
चूर हुवे जब प्रेम नशे में पाप ताप की यह लाद क्या है।
कमला पीले प्रेमका प्याला रस अमृत में विवादक्याहै॥

भजन नं० ॥१०१॥

चलनाहै नजदीक अनाड़ी क्या२तुम पैहै सामान।टे०॥
पाप पुण्य की गठरी बांधी तू तो पूरा है नादान॥
झूठ कपट के बिस्तर बांधे ये तो सारा है खिलजाम।
माया ममता करी सहेली मिले भक्ति का क्यों बरदान॥
काम क्रोध मद लोभ मोह मन डालि खींच तुझे मैदान।
कमला यह सब संग रहैगा जबलग पूरा हो नहीं ज्ञान॥

भजन नं० ॥ १०२ ॥

उमर गमाई बिना भजनके क्या इस जगमें जीनाहै।टेक
तुमतो जगमें भूल रहे हो हरका नाम न लीना है।
नारायण का भजन छोड़ के माया में मन दीना है॥
हानि लाभ की सार न जाने थाही में रँगभीना है।
सोच समझ के भजो हरी को क्या मन में तैं चीना है॥

धृक जीवन धिक्कारेरी कमला क्या जग में तैं कीनाहै

भजन नं० ।१०३।

क्योंमूरखमन विरमरहा तरवरकी झूठी छायाहै ॥टेक
उस तरवर की देखके छाया मन मूरख लुभिआयाहै।
डाल बिस्तरा लेट रहे जब नींद ने आय सताया है ॥
डाँकू चोर लगे जब पीछे हाथ से माल लुटाया है ।
एक छिनक की छायाका सुख देखके फिर पछतायाहै॥
कहां वो छाया कहां वो माया हाथ पसारे धाया है ।
यह संसार लोभकी धारा कमला जन्म बहाया है ॥

भजन नं॥ १०४॥

भजमननारायणअविनाशी आवागमन तेरीछूटजाय।टे.
आवागमन मुक्तिकी बन्धन सब संशय मिटजाय ॥
सोवत जागत सदा देह में मनको यों समझाय ।
नाम लेत जन पार उतर गये जमकी कुछ न बसाय॥
नारायणको नाम निरंतर सुमरो मन समझाय ।
नारायण को नामरी कमला लेय लीन होजाय ॥

भजन नं० ॥१०५॥ कजरी ।

सुमरो नारायण निरधारी तेरी मुक्ति हाल होजाय॥टे.
मुक्ति पदारथ देंगे प्रभुजी जब कुछ करे उपाय ।
वे दयाल दीनन हितकारी तेरी करैं सहाय ॥
सुमरण से संकट सब भाजें सुमरै ध्यान लगाय ।
सुमरण सार और जग झूठो यामें मत बौराय ॥

ऐसेउ हरको नामरी कमला छोड़ कहां तू जाय ॥

भजन नं० ॥ १०६ ॥कजरी

देखो नारायण की माया याको है कैसो प्रकाश॥टेक
चमत्कार सब जगमें दीपै बनो प्रभूके तुम सब दास॥
आपहि प्रघटे आपहि पाले आपहि सबको करे विनाश।
कोई योगी कोई भोगी कोई अघाया कोई उपास ॥
नारायण की अद्भुत माया थकित भये ब्रह्मा कैलास।
कमला माया प्रबल हरी की होतुममनमेंकाहेनिराश॥

भजन नं० ॥ १०७ ॥कजरी

बरणों नारायणकी महिमा तेरी बुद्ध शुद्ध होजाय॥टेक
वेद पुराण बखानत महिमा पूरनपद निरवाण ॥
महिमा अपरम्पार हरी की को कर सकत बखान ।
नाम लेत दुख दूर होत हैं सब संशय मिटजाय ॥
नारायण की महिमा मुख से बरणों चित्त लगाय ।
कमला वरणन करो हरी का गायो चित्त लगाय ॥

भजन नं० ॥१०८॥

नमस्कारनिरंकारनरोत्तमहोसबहीमें व्यापकप्रभुतुम॥टे.
अतिउतंगजहांसुरतनापहुँचेहोतशब्दअनहदघनघोरम्।
सुन समाध लगाय ध्यानमें जोगी सिद्ध रटें घटअन्दर
शेष सहस्र मुख रटै नाम को अन्तन पावैं शिव ब्रह्मादिक
हैं आनन्द जाके पितान माता सदाएक रस रहै अनूपम्
भयभंजन सज्जन सुख दाई रूप न रेखना माया व्यापम्

व्यापकब्रह्मसनातन स्वामी मायारहिततीन गुण नाशम्।
पाछे नमस्कार विष्णु शिव और ब्रह्मा सब सिद्ध मुनीशम
नमो २ श्रीराम लखन को कृष्णचन्द्र बलभद्र विनयतम
योगनध्यानविचारनापूजनकमलाविनतीकरतसबहीसन

ठुमरी भजन नं० ॥ १०९॥

रामा भूली डगरिया तुम्हारी रे ॥टेक॥
मन बुद्धी का कहा न माने कैसे पहुँचे सुरतिया हमारीरे॥
माया ममता बसै महलमें देली २ जंजिरियाकी वाड़ीरे ।
तृष्णा तनमें तपत बढ़ावै कौनखोलै जंजिरिया हमारीरे॥
अंधकार बस रहा भवनमें कैसे सूझै डगरिया तुम्हारीरे।
कमला हर से करे प्रार्थना सुनलो अरजिया हमारीरे॥

भजन नं० ॥११०॥

राम राम भज बारम्बारा ॥ टेक ॥
एक नाम साहिब का सांचा और सकल झूंठा संसारा॥
अतिअपारअतिअगमअगोचरमायाजिनकी अपरंपारा।
वेद पुराण भरैं जिन साखी गति अपार को पावै पारा॥
दीनदयाल दयाके सागर छिन में बेग करैं निस्तारा ।
कमलाचरणकमलबलिहारी बेगी करो प्रभु उद्धारा ॥

भजन नं० ॥ १११॥ ठुमरी

हरसे लागी सनेइया हमारीरे ॥ टेक ॥
हम देखें तुमदीखत नाहीं झूठी होगइ सनेइया हमारीरे।
दीनबंधु मनमें मैं जानूं तिरछी होरही नजरिया तुम्हारीरे

दया करो दीनन हितकारी लीजो२ खबरिया हमारीरे।
दीनबंधु विनती सुनलीजो कैसे गुजरै उमरिया हमारीरे
कमला दोउ कर जोड़ रही है माँगे२ वो भक्ती तुम्हारीरे॥

भजन नं० ।.११२॥

मैं रहूं नाथ के साथ मैं हर पै योगन बनजाती ॥टेक॥
कर लेती भगुवा भेष शील में चूंदर रंगवाती।
कुछ दया का भूषण पहर धर्म को साथी करलाती॥
कुछ क्षमा से उपजे ज्ञान सुरत से साखी दिलवाती।
जब मनको लेती जीत बुद्धि का थापन करवाती॥
जब होय विमल अनुराग प्रेम वारिज जल होजाती।
जब नेह को उमगे सिन्धु प्रीति कर दर्शन करपाती॥
कमला कहती क्या झूंठ तू है माया के मदमाती।
कुछ करती शुद्ध उपाय तु हरसे वेमुख क्यों जाती॥

भजन नं० ॥ ११३॥

लटा धारन जोगन हर पै बनू॥ टेक॥
जब हरसेमेरी लगन लगैमैंपतीसुतधन कुछ नाहिं गिनूं।
तन खाक मलूं पहरूं कफनीजोगन बनके हरिनामसुनूं॥
मन को हो अनुराग जोग का हर दासनकी दास बनूं।
धर ध्यान मैं बैठ रहूं वन में जब अंदर की झनकार सुनूं
कमला दोउ कर जोड़ कहत है हुकम करो सोइ मैं मानूं।

भजन नं० ॥ ११४॥

फकीरी ज्ञान वाले की ॥ टेक॥
सकल पदारथ छोड़ जगत के शरण गही हरकी॥१।

मैं तैं मेट हुये वनवासी प्रीत लगी हरकी॥फकीरी० २॥
सदा सनाती दया धर्म में याद सदा हरकी।फकीरी० ३॥
भेष भरे तो क्या जग पाया छल बल कर भटकी॥फ०४
कमला तू मन क्यों नहीं जीते देख अगन तपकी॥५॥

भजन न०॥११५॥

राम नाम दिन रात रटोरे ॥ टेक ॥
सोवत जागत सदा प्रेम से राम राम अनुराग करोरे।
याही से उत्तम पद पाओ एक नाम आधार करोरे ॥
दीनबंधुजगदीशस्वामिका मनविच कर मनध्यान धरोरे।
जब मन विमल होयगा तेरा राम राम रट और तजोरे।
कमला राम नाम चित्त देरी राम मिलैं उपकार करोरे।

भजन न० ॥११६॥

हम तो स्वामी तेरी शरण हैं ॥ टेक ॥
शरण गहे की बांह गहोप्रभुज्ञानभक्तिकछुनाहिंभजन
सारी उमर धंदे में बीती याही में मन मस्त मगनहै
राम नाम मुख से नहीं लीना हर ओरमेरीनाहींलगनहै
दीनबन्धु विनती सुन लीजो मेरे तो वोही राधेरमनहैं
कमला उमर गई ममतामें अब तो बेड़ा पार लगनहै॥

भजन नं०॥११७॥

खोजो घट में क्या नाद बाजे ॥ टेक ॥
वीणा भी बाजै सरंगी भी बाजे बंसीधुनमनमाँहिविराजे।
घंटा भी बाजे शंखधुन गाजेभीनीर अनहद धुनबाजे।

स्वांसा तार सरंगी कर के प्रेम बांसुरी सुन मनलाजै ।
घंटा करण शंख घट करके हृदे बीच अनन्द धुन गाजे ॥
दृष्टिजमाय देख मस्तकमें झिलमिलजोत महाछविछाजे।
कमला दृष्टि निहार देख तू पाप तापएकछिनमें भाजे ॥

भजन नं० ॥ ११८ ॥

एक हर का नाम पियारा ॥ टेक ॥
झूठ कपट छल छिद्र त्यागकेशरण गहो हरदेयसहारा
शरण गहे से तरगये योगी जिनके राम राम आधारा॥
मायाममता मनको प्यारी इन तीनों से होछुटकारा ।
जब हरसे तुम प्रीति करोगी कृपा करें जब होय गुजारा
गति अपार कोइ पारन पावे लीला हरकी अपरम्पारा।
कमला मुक्ती मांगे हरसे विना भजन कैसो निस्तारा॥

भजन नं० ॥ ११९ ॥ होली

होली खेलोरी सखी मन मगन होय ॥ टेक ॥
ऐसो रंग करो मन मूरख होय आव जामे दीखे झलक
रंग भरनको मथन करोमनऐसो मथो जामें रहैन मलिन
बुद्धकी अवीर गुलाल प्रेमसे प्रीतसे भर पिचकारी कस२
सुरत के करमें ले पिचकारी पियाके मुख में मारो तकतक
कमला तू क्योंना फाग खेलैरीवारडार हरिपे सब तनमन

भजन नं० ।१२०॥ होली

हिल मिल के फाग रचोरी सखी ॥ टेक ॥
तन कर ताल मृदंग करो मन रसना से गान करोरी ।

स्वांसा तार सरंगी बाजै ज्ञानकी झाँझ करोरी ॥ सखी
बुद्धि बजे मिलखूब बजावै सुरत से निरत करोरी॥सखी
प्रेम की बूँटी छानपियो मनप्रीतसे पीतम मिलेरी॥सखी
कमला नेक अनुरागन तेरे उमग की लहर न आवे ॥

भजन नं० ॥ १२१ ॥ होली

हरसे फगवा लेनको चलोरी सखी ॥ टेक ॥
गाय बजाय रिझाय राम कूं सनमुख हरि के जाय ॥
दीनानाथ दया करदें जब मन में मोद भरोरी।
चरण शरण अनुराग राम के शरण गहे की लाज ॥
झूठ कपट छल छिद्र त्याग के शुद्ध होय जब मिलेरी।
कमला मदमाती जग झूमे हर के मिलन की सुधना ॥

भजन नं०॥१२२॥होली

होली खेलन की मेरे मन में उमंग ॥ टेक ॥
अवधपुरी सरजू सुख पावन रामचंद्र जहा सियासंग ।
केसर घोल भरूँ पिचकारी राम से हित सिय छिरकूं रंग
इत्रगुलाल अबीर मलूं मुखागिरहे अजिर सोलगाऊँअंग
श्यामलगातअरुण मृगलोचन मन मधुकर नहींपीवेभंग
कमला बिमल नहीं मन तेरा कैसे मिलें कहाँ देखे ढंग॥

भजन नं० ॥१२३॥

लगी जाके प्रेम की गांसी ॥ टेक ॥
प्रेम मगन लौलीन हरी में जैसी प्राग काशी॥लगी० १
प्रीति रीति अनुराग राम के देखे अविनाशी॥लगी० २
अजपा जपे तपे हिय मंडल रीझै हैं कैलासी॥लगी० ३
सकल वासना तन से त्यागी होगये बनवासी ॥ ४ ॥

कमल। चित्त दे राम भजन में त्याग जगत की फांसी
लगी जाके प्रेमकी गांसी ॥ ५ ॥

भजन नं० ॥ १२४ ॥

भूल चूक छमिवो प्रभु मैं मतिमंद गँवार,
अपनी ओर निहार के करदीजो भवपार ॥
नाथ अब दास करो मोकू, बड़ी समरथ है प्रभु तोकू।

श्रीः।

संक्षिप्त जीवनचरित्र।

श्रीमती कमलादेवी सिकन्दराबाद निवासी मुन्शी कल्याणरायजी की जेठी पुत्री थीं। इनका जन्म सं० १९०२ में हुआ। विवाह बिडौली, जिला मुज़फ्फरनगर निवासी मुन्शी सुखदयालसिंहजी के पुत्र मुन्शी गंगासहाय के साथ सं० १९१५ में हुआ।

श्रीमती जी सदैव पतिसेवा को अपना मुख्यधर्म समझती थीं और गृहस्थाश्रम के सब कामों में बहुत निपुण थीं। देवनागरी लिखने पढ़ने का अभ्यास उन्हें प्रथमसे ही था। भगवद्गीता, विष्णुसहस्रनाम, योगवासिष्ठ और रामायण आदि पुस्तकोंमें अति प्रेम था। सं० १९५६में पीलीभीतमें उनको भगवद्भजन सम्बन्धी कविता करनेका शौक हुआ और परमेश्वरकी कृपा से भजन आदि गाने में उनका पूरा अनुराग होगया। प्रातःकाल ३-४ बजे उठकर अपने बनाये हुए भजनोंका गान किया करती थीं। श्रीमती जी ने अपने भजनों की कापियां प्रायः स्त्रियों को देदीं जिन की कोई नकलभी उनके पास न थी। सं० १९६९में उनकी एक पुस्तक "कमला-भजनसरोवर" बिजनौर में छपाई गई, परन्तु प्रेसके कर्मचारियों के दोष से उसमें बहुतसी अशुद्धियें रहगईथीं। परन्तु अब इस पुस्तक को दो बारा शुद्ध करके लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद में छपाया गया है। और भी पांच बारहमासे उनके बनाये छप चुके हैं। दूसरा और तीसरा भाग भी "कमला-भजनसरोवर" का छपा तयार है। और भी बहुत से भजन पद आदि बने हुए हैं जो अवकाश होने पर प्रकाशित किये जायेंगे।

श्रीमती सं० १९७२ में बीमार हुईं और बीमार होते ही उन्होंने यह कहदिया कि अब यह शरीर त्याग होगा। शरीर त्याग करने से १५ दिन प्रथम श्रीमतीजीने कहा कि पूर्णमासी से २दिन प्रथमशरीर छूटेगा और आठ दिनतक व्रत करूँगी सो ऐसा ही हुआ। श्रीमतीजीने शरीर त्याग से ७-८ दिन प्रथम से सिवाय थोड़े दूधके और कुछ नहीं भोजन किया। द्वादशी को प्रातःकाल यह कहा कि आज १ घृत का दीपक बालकर मेरे सामने रखदो जिससे जब मैं आंखें खोलूं तो ज्योतिही दृष्टिमें आवे और मेरा ध्यान इधर उधर न होवे यह आखिरी दिन उनका बड़ा शिक्षाप्रद और स्मरणीय था। उस दिन नेत्र मुंदे रहे। किसी घर के आदमी को उन्होंने नाम लेकर न पुकारा, जब आंख खोली तो ज्योतिके ही दर्शन किये। बीचमें अपने पदोंको उच्चारती रहीं। २४ घंटे बराबर तकिये के सहारे बैठी रहीं और जब तक प्राणवायु सब शरीर से निकल कर कंठ में आई उस समय तक सन्तोष, परमानंद, पारब्रह्म, जगदीश्वर आदि स्मरण करती रहीं और अन्तसमय पर नयन खोलकर प्राणवायुको निकाल दिया। एक सफ़ेद सूक्ष्म बीजका सा धुआं निकला हुआ अच्छी तरह प्रतीत हुआ। शरीर त्यागने का समय ब्रह्ममुहूर्त ४ बजे त्रयोदशी का दिन था।

गोविन्दसहाय।

पुस्तकें मिलने का पता-

गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद.